

32, 24. नानाविधाकारैरग्निभिर्निचिता महीम् MBh. 3, 10517. निचितं ख-  
मुपेत्य नीरदैः Ghat. 1. BHATT. 10, 4. आ मूलात्पुष्पनिचितैरशोकिः R. 5, 17,  
14. शकुन्तनीडनिचितम् — जटामण्डलम् Çāk. 170. रथः शरैर्निचितः स-  
र्वतः MBh. 5, 7214. 3, 825. रोमभिर्निचितम् R. 3, 74, 15. परिखाः — कीलैः  
मुनिचिताः कृताः MBh. 3, 650. निचितशिखरः पेशलैरिन्द्रनीलैः क्रीडशिलः  
Megh. 73, v. l. Kir. 5, 8. ग्रीवा कम्बुनिचिता Varāh. Brh. S. 68, 5. 71, 1.  
— 3) was sich angehäuft —, gesteckt hat, constipatus: वर्षा निचितं गुदे  
Suçr. 1, 92, 19. स्वदेशे निचिता दोषा अन्यस्मिन्कोपमागताः 130, 19. वायुः  
प्रवृद्धा निचितं बलासं नुदत्यपघातात् 2, 440, 14. — Vgl. निचय.

— आनि scheinbar in आनिचय (BENFEY), welches aber auf अनिचय  
zurückzuführen ist.

— परिणि, प्रणि P. 8, 4, 17. Vop. 8, 22.

— संनि, partic. संनिचित = निचित 3: दोष Suçr. 2, 430, 15. — Vgl.  
संनिचय.

— परि 1) aufschichten, aufeinanderlegen: स चेत्यो राज्ञसिंहस्य सं-  
चितः कुशलेर्द्विजैः R. 1, 13, 30. एरण्डभिण्डाकनलैः प्रभूतैरपि संचितैः । दा-  
रुक्तयं यथा नास्ति Pāṇāt. I, 108. — 2) fertig schichten: संचित Çat. Br.  
6, 4, 2, 8. 8, 1, 4, 7. 10, 3, 1, 2. Çāṅkh. Çr. 9, 23, 1. Lāt. 5, 8, 2, 10. असंचित  
nicht vollständig geschichtet Çat. Br. 2, 1, 2, 15. — 3) zusammenlesen,  
— legen, — ordnen: कपालानि Çat. Br. 12, 4, 1, 8. अस्थीनि Çāṅkh. Çr.  
4, 13, 12. Āçv. Gṛh. 4, 5. Kauç. 83. भाण्डानि Vop. 21, 17. पात्राणि BHATT.  
3, 35. — 4) einsammeln, anhäufen, Reichthümer sammeln, in den Be-  
sitz von Etwas gelangen: संचिन्वति सदा युक्ता जातव्रतं च मौक्तिकम्  
Hariv. 5236. तथा चौषधयो ऽस्माभिः संचिताः R. 5, 2, 32. विविधं वन्यम्  
3, 77, 16. मुन्यत्र पूर्वसंचितम् M. 6, 15. संचयित्वा पुनः कोषम् MBh. 13, 3079.  
राजधर्मैर्विपुक्ताः संचिन्वतो नाद्रिपते स्वधर्मम् 12, 2385. संचितसंचय R. 4,  
27, 14. चिरसंचितं धनम् Hit. 30, 1. Pāṇāt. II, 123. यत्नात्संचिततैलवि-  
न्दघटिका Sāh. D. 63, 9. भाग्यानि पूर्वतपसा खलु संचितानि BHATT. 2, 94.  
पितामहाराधनसंचितास्त्रः R. 5, 43, 2. धर्मं शनैः संचिनुयाद्वल्मीकमिव पुत्ति-  
काः M. 4, 238. 242. MBh. 5, 1550. Hariv. 14738. संचिनुयात् — तपः M. 2,  
164. Çāk. 47. संचिकाय Ragh. 19, 2. तपः संचिनुते मरुत् MBh. 13, 6447.  
सत्कर्म संचयीताम् Çāntiç. 3, 11. संचित angehäuft: दोष Suçr. 1, 21, 1. त-  
पसः Sāh. 6, 11. मोक्षज्ञान Çāntiç. 3, 20. कर्मसंशयविपर्ययादि Vṛdāntas. (Allab.)  
No. 142. पुरुषकार MBh. 13, 341. dīçh, von einem Walde R. 5, 59, 13. —  
5) संचित erfüllt, versehen mit: शिलासंचितवारिमार्ग verstopft Varāh. Brh.  
S. 53, 122. (सैन्य) रत्नपटुसंचित MBh. 6, 3327. (चक्र) अरसंचित, (शतघ्नी)  
लोहकाण्डकसंचिता H. 4. 148. 149. — Vgl. संचय, संचयिन्, संचाय, सं-  
चिन्वानक.

— प्र 1) einsammeln, lesen, abpflücken: न फलानि स्वयं प्रचिन्वीत  
Gobh. 3, 5, 8. कर्षिकारान्प्रचिन्वती MBh. 1, 7720. वनस्पतेरुपधानि फा-  
लानि प्रचिनोति यः 5, 1108. प्रचीयोडुम्बराणि 13, 4434. पुष्पं चैव प्रचि-  
न्वतोम् Hariv. 4598. जलज्ञानि च रत्नानि — प्रचिन्वतो ऽर्णवे 5237. यदा  
विपाठा महुजविप्रमुक्ता द्विजाः फलानीव मरुोरुहाप्रात् । प्रचेतार उत्ता-  
ङ्गानि यूनाम् MBh. 5, 1865. सुराणामुत्तमाङ्गानि प्राचिनोत् Hariv. 13542.  
यदा रथायो रथिनः प्रचेता Feinde lesen so v. a. niedermähen MBh. 5,  
1832. — 2) vermehren, vergrößern: स (अश्वः) भर्तुरचिरात्प्रचिनोति ल-  
क्ष्मीम् Varāh. Brh. S. 92, 18. pass. sich ansammeln, zunehmen: ततस्तु ली-  
यते चैव पुनश्चान्यत्प्रतीयते MBh. 14, 509. प्रचीयमानावयवा (eine Schwan-  
gere) रराज सा Ragh. 3, 7. प्रचित angehäuft: कफ Suçr. 2, 362, 5. — 3)  
प्रचित bedeckt, gefüllt mit: चितासकृत्प्रचित MBh. 12, 1702. पुम्भिः प्राचि-  
तान् — गोष्ठान् BHATT. 2, 14. — Vgl. प्रचय, प्रचाय.

— विप्र scheinbar in विप्रचित (BENFEY), welches aber, wie man nach  
मुनिचित in demselben gaṇa सुतंगमादि zu P. 4, 2, 30 schliessen darf, in  
विप्र ein Brahman + चित zu zerlegen ist.

— संप्र vollständig einsammeln MBh. 12, 5952; s. u. अवा.

— वि 1) auslesen, aussuchen: (त्रोक्तौ) मूलांश्च कृक्षांश्च विचिनुयात्  
TS. 2, 3, 1, 3. 1, 8, 3. Çat. Br. 9, 1, 1, 23. पुष्पं पुष्पं विचिन्वीत मूलच्छेदं  
न कारयेत् । मालाकार इवारामे न यथाङ्गारकारकः ॥ MBh. 5, 1111. शरी-  
रेभ्यो ऽमरारीणाममूनिव विचिन्वति (3te sg.) Dev. 2, 67. Namentlich  
vom Sichten der Soma-Pflanzen VS. 4, 24. TS. 6, 1, 9, 1. Çat. Br. 3, 3,  
2, 5, 8. Kāt. Çr. 7, 6, 2. 7, 10. Vgl. 2. चि mit वि. — 2) sondern, zerthei-  
len (das Haar): नाप्यस्ति पल्यो लोमं वि चिन्वतु मनीषया VS. 23, 36. —  
3) ausscheiden, fortschaffen, zerstreuen: क्रव्यात्क्रविषुर्वि चिनोतु वृ-

II. Theil.

कणाम् RV. 10, 87, 5. स्तुकेव वीता धन्वा विचिन्वन्धूर्मिमां अवरं इन्द्रे वा-  
पून् 9, 97, 17. पुवं दाशुषे वि चयिष्ठमर्कः 6, 67, 8. विचितकेश (वासस) Kāt.  
Çr. 7, 2, 19. — 4) (einen Weg) bahnen (das im Wege Liegende bei Seite  
schaffen): वि नः पथः सुविताय चयितु RV. 1, 90, 4. वि नः पथश्चितन् य-  
ष्टवे 4, 37, 7. 6, 53, 4. — 5) vertheilen (Beute), einziehen (Spielgewinn):  
इह प्रमत्तो वि चयत्कृतं नः RV. 5, 60, 1. 1, 132, 1. 9, 97, 58. भरे कृतं व्यचे-  
दिन्द्रसेना 10, 102, 2. कृतं न अघ्नी वि चिनाति देवने 43, 5. 42, 9. AV. 4,  
38, 1. — 6) verschichten, falsch schichten Çat. Br. 9, 2, 2, 43. — Vgl. वि-  
चयिष्ठ, विचित्, विचिन्वत्क, विचेतर्.

— संवि aussondern: अवर्यं संविचेतव्या युद्धे परमभीरवः R. 5, 85, 18.

— सम् 1) aufschichten, aufeinanderlegen: स चेत्यो राज्ञसिंहस्य सं-  
चितः कुशलेर्द्विजैः R. 1, 13, 30. एरण्डभिण्डाकनलैः प्रभूतैरपि संचितैः । दा-  
रुक्तयं यथा नास्ति Pāṇāt. I, 108. — 2) fertig schichten: संचित Çat. Br.  
6, 4, 2, 8. 8, 1, 4, 7. 10, 3, 1, 2. Çāṅkh. Çr. 9, 23, 1. Lāt. 5, 8, 2, 10. असंचित  
nicht vollständig geschichtet Çat. Br. 2, 1, 2, 15. — 3) zusammenlesen,  
— legen, — ordnen: कपालानि Çat. Br. 12, 4, 1, 8. अस्थीनि Çāṅkh. Çr.  
4, 13, 12. Āçv. Gṛh. 4, 5. Kauç. 83. भाण्डानि Vop. 21, 17. पात्राणि BHATT.  
3, 35. — 4) einsammeln, anhäufen, Reichthümer sammeln, in den Be-  
sitz von Etwas gelangen: संचिन्वति सदा युक्ता जातव्रतं च मौक्तिकम्  
Hariv. 5236. तथा चौषधयो ऽस्माभिः संचिताः R. 5, 2, 32. विविधं वन्यम्  
3, 77, 16. मुन्यत्र पूर्वसंचितम् M. 6, 15. संचयित्वा पुनः कोषम् MBh. 13, 3079.  
राजधर्मैर्विपुक्ताः संचिन्वतो नाद्रिपते स्वधर्मम् 12, 2385. संचितसंचय R. 4,  
27, 14. चिरसंचितं धनम् Hit. 30, 1. Pāṇāt. II, 123. यत्नात्संचिततैलवि-  
न्दघटिका Sāh. D. 63, 9. भाग्यानि पूर्वतपसा खलु संचितानि BHATT. 2, 94.  
पितामहाराधनसंचितास्त्रः R. 5, 43, 2. धर्मं शनैः संचिनुयाद्वल्मीकमिव पुत्ति-  
काः M. 4, 238. 242. MBh. 5, 1550. Hariv. 14738. संचिनुयात् — तपः M. 2,  
164. Çāk. 47. संचिकाय Ragh. 19, 2. तपः संचिनुते मरुत् MBh. 13, 6447.  
सत्कर्म संचयीताम् Çāntiç. 3, 11. संचित angehäuft: दोष Suçr. 1, 21, 1. त-  
पसः Sāh. 6, 11. मोक्षज्ञान Çāntiç. 3, 20. कर्मसंशयविपर्ययादि Vṛdāntas. (Allab.)  
No. 142. पुरुषकार MBh. 13, 341. dīçh, von einem Walde R. 5, 59, 13. —  
5) संचित erfüllt, versehen mit: शिलासंचितवारिमार्ग verstopft Varāh. Brh.  
S. 53, 122. (सैन्य) रत्नपटुसंचित MBh. 6, 3327. (चक्र) अरसंचित, (शतघ्नी)  
लोहकाण्डकसंचिता H. 4. 148. 149. — Vgl. संचय, संचयिन्, संचाय, सं-  
चिन्वानक.

— अग्निसम् um einer Sache willen (acc.) schichten: अग्निः सर्वान्कामा-  
नात्मानमभिसंचिन्वीय Çat. Br. 10, 2, 4, 1. 2. तत्सर्वमात्मानमभिसंचिनुते 8,  
9, 15.

— परिसम् einsammeln, anhäufen: द्वयोधाः परिसंचिताः खलु मया  
Sāh. D. 73, 12.

2. चि (कि Dhātup. 13, 19), (नि) चिकैषि, (अप) चिकोहि, अचिकेत, par-  
tic. निचिक्वत्; (वि) चिनवत्, partic. विचिन्वन्; (नि) चिकीय, (नि) चि-  
क्युस्; अचैत्; med.: (अनु) चिकिताम् 3. imperat., अचिधम्, (नि) चिकैथे;  
partic. निचित. In der klass. Sprache चिनोति, चिनुते u. s. w. wie 1. चि  
und mit diesem bis jetzt als identisch betrachtet. Mit वि berühren sich  
beide Wurzeln so nahe, dass die Scheidung bisweilen Schwierigkeiten  
macht. 1) wahrnehmen: उपच्छ्रेषु यदचिधं ययिम् RV. 1, 87, 2. तं वा य-  
मो अचिकेत 10, 51, 3. — 2) das Augenmerk richten auf: यत्राचिधं मरुतो  
गच्छते तत् RV. 5, 53, 7. क्वया नो अस्य क्वविष्यतिकेतु TS. 3, 3, 11, 5.

63\*